188
नवंबर-दिसंबर 2016

समकालीन भारतीय साहित्य

साहित्य अकादेमी की द्वैमासिक पत्रिका
मूल्य 25 रुपये

मलयाळम के विशिष्ट लेखक एन. वी. कृष्ण वारियार की जन्मशती पर विशेष सामग्री

समकालीन भारतीय साहित्य

वर्ष 37 : अंक 188 (नवंबर-दिसंबर 2016)

5 संपादकीय

एन.वी. कृष्ण वारियर : जन्मशती पर विशेष

9 **ए. अरविन्दाक्षन :** एन.वी. कृष्ण वारियर की भाषा-दृष्टि

13 **एस. तंकमणि अम्मा :** एन.वी. कृष्ण वारियर का व्यक्तित्व तथा सृजन-संसार

20 **एल. तोमसकुट्टी :** काल्पनिक कामनाओं का कोच्चुतोम्मन

28 **प्रमोद कोवप्रत :** एन.वी. कृष्ण वारियर का पारिस्थितिकी चिंतन

33 **आर. सेतुनाथ :** निबंधकार एन.वी. कृष्ण वारियर

37 **सुजा सी. :** एन.वी. कृष्ण वारियर की कविता की अंतरंग पहचान

47 **राजेश्वरी के. :** एन.वी. कृष्ण वारियर की कविता : एक पुनर्पाठ

52 **पी.के. प्रतिभा :** पत्रकार एन.वी. कृष्ण वारियर

58 **पी. लता :** एन.वी. कृष्ण वारियर : भाषाविद् तथा कोशकार

64 **एन.वी. कृष्ण वारियर :** हाथी की पूँछ / कार्तिक माह में (कविता)

कहानी

70 **शुभांगी भडभडे :** अद्वैत की चौखट पर (मराठी)

80 **रेणुका पटेल :** परिपूर्ण (गुजराती)

87 **वासदेव मोही :** चेक बुक (सिंधी)

94 **रतन वर्मा :** ब्रीफ़केस (हिंदी)

100 **सुषमा मुनींद्र :** जब कैलेंडर पर तारीख़ बदल रही थी (हिंदी)

116 **किरण राजपुरोहित नितिला :** आसरा (हिंदी)

कविता

122 **सीताकांत महापात्र :** इंतज़ार कर रहे थे / माँ, वाराणसी / जन्मदिन (ओड़िया)

125 **कीर्तिनारायण मिश्र :** सद्यःजात शिशु से संवाद (मैथिली)

127 **सुरजीत पातर :** उतरेगी अपनी भाषा में (पंजाबी)

129 **नीलम माणगावे :** पूँजीनिवेश (मराठी)

131 **वीरभद्र कार्कीढोली :** डायरी / नहीं कहूँगा किसी से (नेपाली)

प्रमोद कोवप्रत

एन.वी. कृष्ण वारियर का पारिस्थितिकी चिंतन

एन.वी. कृष्ण वारियर बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व रहे हैं। मलयालम एवं भारतीय साहित्य को उनका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत वे कई साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समितियों में सदस्य रहे। एक प्रतिभाशाली अध्यापक, कुशल पत्रकार, भाषा संस्थान, केरल के निदेशक, एक सफल शोधार्थी, चिंतक एवं सर्वोपरि लेखक के रूप में उन्होंने अपनी क्षमता का परिचय दिया। 13 मई 1916 को जन्मे एन.वी. कृष्ण वारियर 'मातृभूमि' साप्ताहिक के मुख्य संपादक के रूप में काम करते हुए 12 अक्टूबर 1989 को दिवंगत हो गए।

कवि, चिंतक, वक्ता एवं निबंधकार के रूप में एन.वी. ने अपने जीवन काल में काफ़ी ख्याति पाई। भाषा, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति एवं कूटनीति, इतिहास, मनुष्य, समाज, शोषण, शिक्षा, पर्यावरण, स्त्री मुक्ति आदि पर उन्होंने सैकड़ों निबंध लिखे। सामाजिक विषमताओं, अन्यायों एवं असमानताओं पर वे बोलते रहे और लेखन के ज़रिए सक्रिय रूप से सामाजिक समस्याओं पर हस्तक्षेप करते रहे तथा समाज को प्रतिरोध का रास्ता दिखाने का स्तुत्य कार्य किया। मानव राशि एवं समस्त ब्रह्मांड जिन-जिन चुनौतियों से गुज़र रहे हैं, उनके प्रति वे पर्याप्त सचेत थे। प्रकृति एवं परिस्थिति हमेशा उनके प्रिय विषय रहे। इससे जुड़ी व्याकुलताएँ एवं आशंकाएँ कृष्ण वारियर ने अपने सैकड़ों निबंधों में अभिव्यक्त की हैं।

ख़तरे में पड़ी, अणु से बिजली, रासायनिक हथियार, आणविक हथियार का उद्योग और प्रकृति-प्रदूषण व्यूह, भोपाल उत्पीड़ितों की क्षतिपूर्ति, वायुमंडल की सुरक्षा पर एक अंतर्राष्ट्रीय उद्घोषणा, नई राष्ट्रीय वन नीति, ओज़ोन परतों की रक्षा हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, सोलर मैक्सिमम्, एड्स संबंधी बीमारी, पेयजल की समस्या—नल कुआँ एक समाधान नहीं, नर्मदा नदी परियोजना और हरसूद जुलूस, क्या कस्तूरी हिरण बचेगी, मेंढक, तितलियाँ, बिल्ली, चीता, ओरांग ऊटांग, थोड़ी-सी बात हाथी की, युद्ध के लिए जानवर, गुलाब के

जन्म : 1972। कवि एवं आलोचक। संपर्क : प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, मलाप्पुरम ज़िला, केरल-673635;
मो. : 09447887384

साहित्य

194

नवंबर-दिसंबर 2017

समकालीन भारतीय साहित्य

साहित्य अकादेमी की द्वैमासिक पत्रिका

मूल्य 25 रुपये

कश्मीरी कवि दीनानाथ नादिम पर विशिष्ट सामग्री

समकालीन भारतीय साहित्य

वर्ष 38 : अंक 194 (नवंबर-दिसंबर 2017)

5 **संपादकीय**

दीनानाथ नादिम : जन्मशती पर विशेष

9 **दीनानाथ नादिम (कविताएँ) :** प्रात: राग / मुक्ति पत्र / गणित विचार / मुझे है आस कल की / शांति की अपील पर हस्ताक्षर / भिनसार / संकल्प / रोटी-सा चाँद / वैसा ही आज का दिन भी / आज बड़ा दिन / मैं आज गाऊँगा नहीं

27 **शशिशेखर तोषखानी :** प्रगतिवादी कश्मीरी काव्यांदोलन और दीनानाथ नादिम

32 **यूसुफ़ टेंग** द्वारा **दीनानाथ नादिम** का साक्षात्कार

कविता

43 **विश्वनाथ प्रसाद तिवारी :** अथात: अन्न जिज्ञासा / 1909 का गाँव / जंगल में भाषा (हिंदी)

47 **पद्मा सचदेव :** अमन (डोगरी)

48 **एल. तोमस कुट्टी :** जो है / लंबवत् (मलयालम)

50 **अश्वघोष :** रात वो सोया नहीं / एक मकाँ और (ग़ज़ल)

51 **अष्टभुजा शुक्ल :** शायद कविता / यह कदली स्तंभ / दूरी / जीवन का अनिवार्य पाठ / बेमौसम बरसात (हिंदी)

55 **हबीब कैफ़ी :** उसने आते ही दिया / पत्थरों के बीच थोड़ी ज़िंदगी / जो मिलने आता है (ग़ज़ल)

57 **राम जैसवाल :** अब, रात नहीं होती / वारिस (हिंदी)

60 **सोमदत्त शर्मा :** धरा पर सर्जक (हिंदी)

61 **मालिनी गौतम :** प्रेम मापक यंत्र / यात्रा सौरमंडल की (हिंदी)

64 **पुरु मालव :** पगडंडियाँ / कुछ लोग / हमारे हिस्से है (हिंदी)

कहानी

66 **विनोद घोषाल :** डैनेवाला मानुष (बाङ्ला)

79 **परगट सिंह सतौज :** युद्ध का अंत (पंजाबी)

84 **अशोक गुजराती :** ग़म नहीं, हाँ आँख मेरी नम नहीं (हिंदी)

अपने कर्त्तव्य को पहचानो
औलाद की उँगली पकड़
उन्हें रास्ते पर ले आओ
पुरुष ऐसा नहीं कर पा रहा
तो तुम सब आगे आओ
भूल गईं क्या?
माँ के हाथ में
प्रकृति ने बख़्शी है
युग बदलने की सामर्थ्य...

मलयालम

एल. तोमस कुट्टी

जो है

काश, दूसरी तरह हुआ होता
हमेशा सोचता
यह भी कि ऐसा न होगा न तब भी
रंग और संभावनाएँ
और ज़्यादा होंगी समस्याएँ
संभावनाओं की सीमा नहीं
और क्षितिज का अंत भी।
फिर भी दूसरी तरह होना था।
पहले शंकित खड़े
चौराहे और साईन बोर्ड
अगर दूसरे हो जाते तो?
पहले पहल हँसते-बतियाते दोस्त
दूसरा कोई होता तो प्रथमाक्षर
रेत में मसले
वह देहाती गुरु
और कोई होता तो
पहले पहल

जन्म : 1964। नाटककार, अभिनेता, चित्रकार, कवि। आलोचनात्मक लेख एवं कविता-संग्रह प्रकाशित। संपर्क : प्रो.फ़ेसर, हिंदी विभाग, कालिकट विश्व-विद्यालय, ज़िला, मलापुरम, केरल 673635, मो. 09947390078

अनु: **प्रमोद कोवप्रत**। जन्म : 1972। कवि एवं आलोचक। संपर्क : प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, मो. 09447887384

ISSN 2231-6191

जन विकल्प

8

पारिस्थितिकी और साहित्य

विकल्प, तृशूर

अनुक्रम

संपादकीय : धरती को चरागाह बनाती सभ्यता	पी. रवि	
अतिथि संपादकीय : पृथ्वी अत्यंत संवेदनशील है	वी.जी. गोपालकृष्णन	
साहित्य, समाज और पर्यावरण	संतोष अर्श	10
जलवायु परिवर्तन और अमिताभ घोष	गोपाल प्रधान	18
विस्थापन : विडम्बना और त्रासदी	वीरेन्द्र मोहन	33
पर्यावरण और विकास का आतंक	सुप्रिया के.पी.	40
समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण और मानवाधिकार के प्रश्न	डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	52
पारिस्थितिक शोषण और समकालीन हिन्दी कविता	डॉ. रम्या पी.आर.	69
समकालीन हिन्दी कविता में पृथ्वी-बोध	धन्या के.पी.	76
पर्यावरण एक सांस्कृतिक संकट है	डॉ. ए.एस. सुमेष	82
‘डिजिटल दुनिया’ से झाँकने पर प्रकृति और आम जन	रम्या राज आर.	86
पारिस्थितिक विमर्श और नागार्जुन की कविता	प्रो. प्रमोद कोवप्रत	90
पारिस्थितिकी और साहित्य : लोककवि कबीर के आईने में	विजय कुमार संदेश	98
कालिदास के काव्य में वन, वन्य जीवन और वन्य संस्कृति	दादूराम शर्मा	101
समकालीन हिन्दी नाटक में पारिस्थितिक नारीवाद	के. अजिता	108
संतुलन चाहती धरती और संतुलन बिगाड़ते मनुष्य	हरिप्रिया आर.	114
पारिस्थितिक नारीवाद : ‘धार’ और ‘पहाड़चोर’ के विशेष संदर्भ में	डॉ. इंदु पी.एस.	120
भूमिपुत्र होना ही पड़ेगा	शिगेष जी.एस.	124
हरित क्रांति की फसल है कैंसर	रामप्रसाद	133
रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून	नीलाभ कुमार	139
एक लाल तर्जनी (मलयालम कहानी)	पी. वत्सला	146
खेती और समकालीन मलयालम कहानी	सिन्धु ए.	154
राजनैतिक स्वार्थ और शोषित होती प्रकृति	मन्जुषा के.एम.	160
बाज़ारवादी दौर में पारिस्थितिकी	अंजली जोसफ़	167

पारिस्थितिक विमर्श और नागार्जुन की कविता

प्रो. प्रमोद कोवप्रत

वैश्वीकरण ने दुनिया के सामने विकल्प के नये आयाम खोल दिए हैं। एक ओर जीवन को मस्त जीने की सारी सुविधाएँ वह प्रदान करता है तो दूसरी ओर ढेर सारे संकट भी पैदा हुए हैं। वैश्वीकरण में फैली बाज़ारवादी प्रवृत्ति ने उपभोक्ता संस्कृति को जन्म दिया है। इस संस्कृति में मुनाफा कमाना ही ध्येय बन जाता है। प्रकृति तक सिर्फ शोषण का साधन बन गयी है। व्यावसायिक दृष्टि से जब दोहन की प्रक्रिया प्रकृति में मज़बूत होने लगी तो मानव के जीवन में इतने सारे संकट उत्पन्न होने लगे कि जीना मुश्किल होने लगा। प्रकृति के संतुलन को बिगाडने में मानव की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। 'इकोलजी' में प्रकृति, मनुष्य, पेड-पौधे तथा सभी जीव-जंतुओं का सह-अस्तित्व ही माना गया है। किसी एक का सर्वनाश संतुलन के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। वर्तमान साहित्य में ऐसी ज्वलंत समस्याओं की अभिव्यक्ति अवश्य मिलती है। लेकिन इसका पूर्वभास बहुत पहले ही साहित्य में मिल जाता है। प्रकृति को साथ रखकर ही हमारा साहित्य लिखा गया है।

नागार्जुन प्रगतिवाद के क्रांतिकारी रचनाकार रहे हैं। वर्ग-संघर्ष, राजनीतिक ढकोंसले, प्रजातंत्र का खोखलापन, भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, अकाल, गरीबी आदि सामाजिक यथार्थ के विभिन्न चेहरों को अपनी कविताओं में उन्होंने सशक्त ढंग से अभिव्यक्त किया है। लेकिन साथ ही उनकी कुछ रचनाओं में पारिस्थितिक सजगता तथा पर्यावरण-संकट देख सकते हैं। 'युगधारा' की कविता 'धरती' इसका स्पष्ट दृष्टांत है। मिट्टी के शोषण के प्रति कवि सशक्त चेतावनी इसमें देते हैं। वे धरती को महानाश से बचाना चाहते हैं। कवि का विश्वास है कि आज शांति सा जो दिखाई देता है वह दरअसल प्रलय का ही पर्याय है। मनुष्य के लिए हमेशा प्रकृति पराजय करने का उपादान रही है। चेतावनी का कड़ा स्वर इन पंक्तियों में है -

> धरती धरती है/ पन्हाई हुई गाय नहीं
> कि चट से दूह लो कटिया-भरदूध
> धरती धरती है -/ चावल या गेहूँ की ढेर नहीं
> कि कुर्क कराके उठा ले जाओ,
> बेच दो मंडियों में जाकर!
> धरती धरती है -/ नहीं है वह आटोमोबाइल
> कि स्विच दबाकर ड्राइन करोगे
> छोड़ दोगे ले जाकर पटना या दिल्ली।"[1]

प्रकृति मानव के लिए एक वरदान है, कामधेनु है। मगर उसका अंधाधुंध शोषण मानव राशि के लिए स्पृहणीय नहीं है। 'कुर्कु कराके या जब्त कराके उठा ले जाने' व 'मंडियों में जाकर बेचने'

गगनांचल

साहित्य कला एवं संस्कृति का संगम

वर्ष: 40, अंक: 1-2, जनवरी-अप्रैल, 2017 (संयुक्तांक)

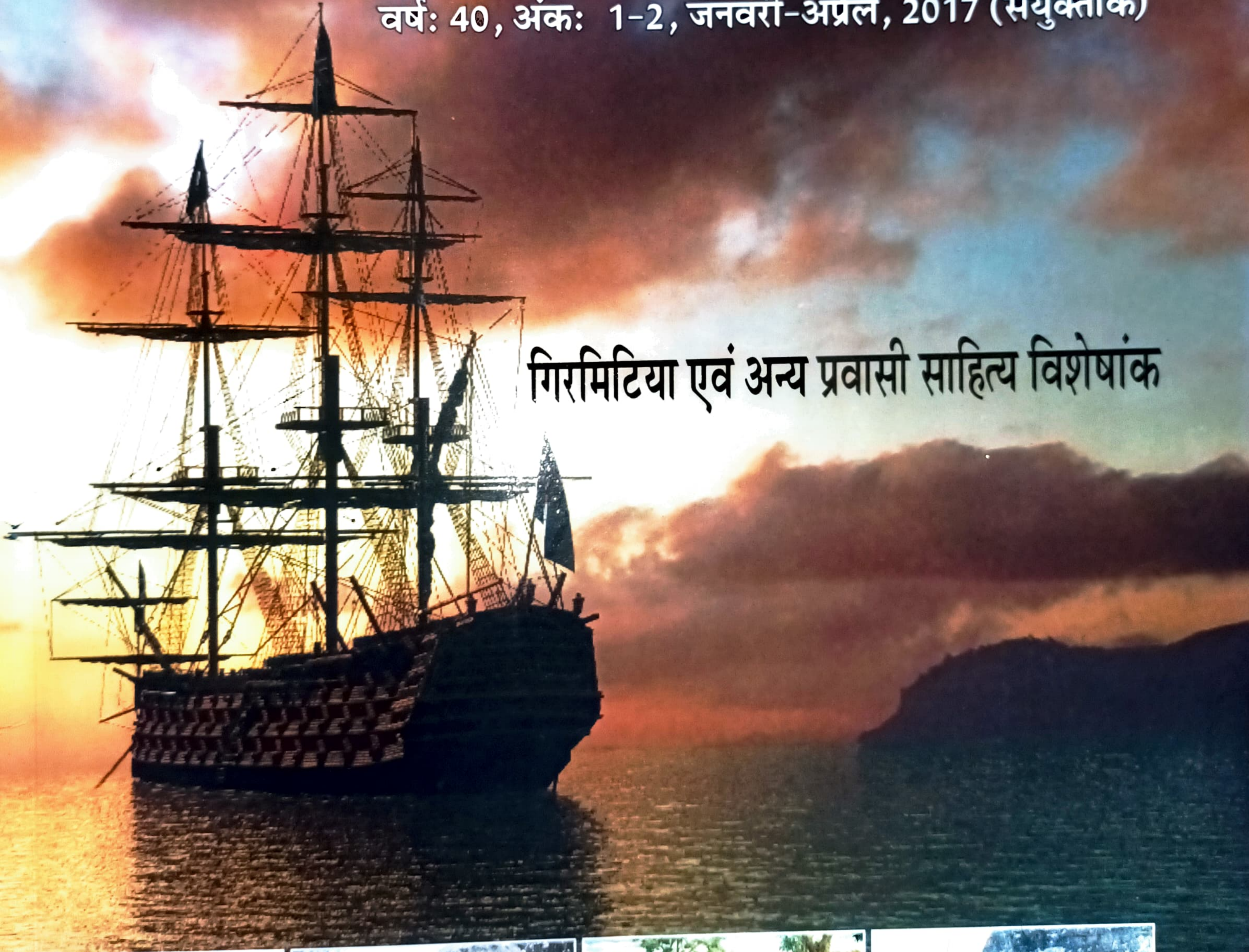

गिरमिटिया एवं अन्य प्रवासी साहित्य विशेषांक

गगनांचल

जनवरी-अप्रैल 2017 (संयुक्तांक)

प्रकाशक

रिवा गांगुली दास

महानिदेशक

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली

संपादक

डॉ. हरीश नवल

सह-संपादक

डॉ. आशीष कंधवे

ISSN : 0971-1430

संपादकीय पता

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्

आजाद भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002

ई-मेल: ddgnk.iccr@nic.in, dirpub.iccr@gov.in

गगनांचल अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध है।
www.iccr.gov.in/journals/hindi-journals
पर क्लिक करें।

गगनांचल में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है। किंतु पुनर्मुद्रण के लिए आग्रह प्राप्त होने पर अनुमति दी जा सकती है। अतः प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना कोई भी लेखादि पुनर्मुद्रित न किया जाए। गगनांचल में व्यक्त विचार संबद्ध लेखकों के होते हैं और आवश्यक रूप से परिषद् की नीति को प्रकट नहीं करते। प्रकाशित चित्रों और फोटोग्राफ्स की मौलिकता आदि तथ्यों की जिम्मेदारी सम्बंधित प्रेषकों की है, परिषद् की नहीं।

शुल्क दर

वार्षिक	:	₹	500
		यू.एस. $	100
त्रैवार्षिक	:	₹	1200
		यू.एस. $	250

उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली' को देय बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

मुद्रक: सीता फाईन आर्ट्स प्रा. लि. नई दिल्ली-110028
www.sitafinearts.com

अनुक्रम

■ **गिरमिटिया तथा प्रवासी संदर्भ** ■

1. गिरमिटिया व अन्य प्रवासी हिन्दी लेखन : प्रो. महिपती जगन्नाथ शिवदास — 5
2. गिरमिटिया हिन्दी : संरक्षण और संवर्द्धन : डॉ. विमलेश कांति वर्मा — 7
3. गिरमिटिया हिन्दी कविता में भारतीय संस्कृति : प्रो. हरिमोहन — 10
4. गिरमिटिया दर्द की आवाज : प्रवासी पत्रिका : डॉ. राकेश कुमार दुबे — 18
5. गिरमिटिया श्रमिकों के देश में दस दिन : डॉ. चंद्रकांता किनरा — 22
6. गिरमिटियों के 'बैठका' से विश्वविद्यालय तक : डॉ. उमेश कुमार सिंह — 27
7. गिरमिटिया देश फीजी : हिन्दी पत्रकारिता के 103 वर्ष : डॉ. जवाहर कर्नावट — 31
8. भारतवंशी गिरमिटिया : राजेश कुमार मांझी — 37
9. साहित्य के दर्पण में प्रवासी साहित्य : स्नेह ठाकुर — 50
10. स्विटज़रलैंड को लुभाया हिन्दी ने : डॉ. ज्योति शर्मा — 54
11. अरमेनिया में हिन्दी भाषा : अध्ययन-अध्यापन : डॉ. कविता सिंह — 57

■ **विमर्श** ■

12. चीनी और चाय का समाजशास्त्र : रीतारानी पालीवाल — 61
13. हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच सार्थक संवाद की आवश्यकता : रमेश चंद्र शाह — 65
14. भारतीय संस्कृति का मूल आधार 'अध्यात्म' : आचार्य डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त — 67
15. हिन्दी ग़ज़ल का परिदृश्य : ज्ञान प्रकाश विवेक — 70
16. ज़िन्दग़ी की उड़ान : एक ख्वाब : डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू — 74
17. आर्यों का मूल निवास स्थान : प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा — 78
18. ध्वनि में रस, रस में जीवन तलाशते अभिनव गुप्त : डॉ. उदय प्रताप सिंह — 84
19. महादेवी वर्मा का गद्य : चिन्तन और सम्वेदना : राजेन्द्र परदेसी — 89
20. ज्ञानपीठ विजेता ओ.एन.वी. कुरुप का काव्य : डॉ. प्रमोद कोवप्रत — 92
21. सर्वेश्वर की सृजन चेतना एवं सौंदर्य-बोध : दान बहादुर सिंह — 95
22. ये वादियाँ ये फिज़ायें बुला रही हैं तुम्हें : जितेन्द्र निर्मोही — 100
23. स्मृति शेष : उस्ताद हलीम जाफर खां : डॉ. राजेश कुमार व्यास — 103

■ **कहानियाँ** ■

24. अर्धांगिनी : दिव्या माथुर (इंग्लैंड) — 105
25. अभिमानी-निराभिमानी : पुष्पा सक्सेना (अमरीका) — 114

ज्ञानपीठ विजेता ओ.एन.वी. कुरुप का काव्य

डॉ. प्रमोद कोवप्रत

> "...हमारे समाज की बड़ी त्रासदी विडंबना है कि आज हम कई संकटपूर्ण क्षणों से गुजर रहे हैं। खाने के लिए, पानी के लिए, आवास के लिए, समता के लिए, न्याय के लिए तरसने वाली जनता की लंबी कतार देख सकते हैं। सच में हम अपने पेट भरने के मामले तक में मर रहे हैं।..."

सम्पर्क : प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय, मलापुरम जिला, केरल-673635
मोबाइल: 09447887384

"बचपन से जिन सागर एवं झीलों को मैं देखता आ रहा हूँ और उधर मुसीबत झेलने वाले मनुष्य के आँसुओं का आदि का मिश्रण है मेरी कविता। थोड़ा सी मिठास भी है। नमक मीठापन जो मनुष्य जीवन से शब्दबद्ध करने वाला एक मामूली कवि मैं। टैगोर की कविता में एक पंक्ति है— "सदा विनम्रता ही मेरा हो। यह मैं मुझे याद दिलाता हूँ मैं एक साधारण कवि मात्र हूँ। पर कवि कहना बड़ी जिम्मेदारी होती है। सभी प्रलोभनों के परे रहकर अक्षरों को संभालने वाले हैं। अक्षरों की उस अंजुरी में मनुष्य की एवं आशाओं को भरना है यह समझता हूँ।"

ज्ञानपीठ से सम्मानित मलयालम के लोकप्रिय कवि ओ.एन.वी. कुरुप ये शब्द खुद प्रमाणित करते हैं कि समय एवं समाज के प्रति वे प्रतिबद्ध हैं। माटी का स्वर जरूर परिवर्तन एवं स्थिरता का स्वर ओ.एन.वी. कुरुप ऐसे ही प्रतिबद्ध एवं प्रतिभाशाली कवि हैं सर्वहारा के स्वर को बुलंद करने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन दिशा की ओर अपनी वाणी को मोड़ दिया।

ओ.एन.वी. कुरुप की खासियत यही है कि उन्होंने मनुष्य के दुख अपना ही दुख बना दिया। जनप्रिय शैली में संगीतात्मकता के साथ लिखते थे। समत्वपूर्ण एक समाज का सपना उन्होंने देखा तो कविता विप्लव की ज्वाला भड़कने लगी। नया सामाजिक बोध, कृषक संस्कृ एवं सर्वहारा के प्रति निष्ठा की भावना उनकी कविता को कालज बनाती है। मानव हृदय को गहराई से परखने वाले कवि के रूप वे उभर आए। सामाजिक यथार्थ की तरह रोमांटिक भावना भी यहाँ देख सकते हैं। 'प्यासा पेय पात्र, एक बूँद रोशनी, नील आँखें मरुस्थल, अक्षर, काले पक्षी का गीत, नमक, भूमि के लिए एक गीत, अग्निशलभ, अपराहन, मृगया, उज्जयिनी, स्वयंवर आदि कृतियाँ अत्यंत चर्चित हैं। फिल्मों के लिए जितने भी गीत लिखे गए वे लोकप्रिय ही नहीं, कालजयी भी हैं।

बच्चे को दुग्धपान कराने वाली माँ के रूप में वे प्रकृति एवं धरती को देखते हैं। माँ रूपी मिट्टी एवं प्रकृति को पुरुष वर्चस्व वाले आभिजात्य स्वभाव से मुक्त करना ही क्रांति है। मानवीय एकता एवं समता को वे महत्त्व देते हैं। 'हँसिया एवं कोयल' में यही भाव प्रकट है। 'मिट्टी का स्वप्न' में वे धरती को बार-बार जोतने तथा नये फसल के लिए यहाँ बोने का आह्वान करते हैं। धर्मनिरपेक्ष दृष्टि के साथ सभी को कवि देखते हैं। पर धरती तरुणाई के साथ खड़ी है। 'भूमि, एक बूँद रोशनी' की पंक्तियाँ हैं—

"देखते देखते बुढ़ा बनेगी संतानें
मगर माँ तेरी नव तरुणाई

ISSN : 2321-5569

मूल्य : ₹ दस

मधुमती

फरवरी, 2017

राजस्थान साहित्य अकादमी

www.rsaudr.org

1

इस अंक में

लेख

• नरेन्द्रनाथ दत्त से स्वामी विवेकानन्द तक	सीमा शर्मा	07
• बालकवि बैरागी-हिन्दी साहित्य सृजन के आराधक	ग्यारसीलाल सैन	12
• स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा-चिन्तन	सुरेन्द्र माहेश्वरी	16
• भारत-बोध	डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली	19
• राष्ट्रीय-सामाजिक भावैक्य : केरलीय संतों एवं सुधारकों की भूमिका	डॉ. प्रमोद कोवप्रत	22
• सुधाकर : साहित्यिक जागरण के पुरोधा सुकवि	डॉ. प्रणव देव	29
• आत्मसंघर्ष का साहित्यकार : रमेश बक्षी	डॉ. प्रीता. सी	34
• प्रकृति की खूबसूरती का संकल्प हैः बसंत ऋतु	बलविन्दर 'बालम'	37
• भाषायी छल-प्रपंच से दूर थे विवेकीराय	राजकुमार कुम्भज	40
• साहित्य सृजन प्रासंगिक व संदेश युक्त हो	किशन धीरज	42

कविताएँ

• तीन कविताएं	डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'	44
• दो कविताएं	द्वारकालाल 'गुप्त'	46
• पाँच कविताएं	हितेश व्यास	48
• तीन कविताएं	जसविंदर शर्मा	51
• तीन कविताएं	अनिरूद्ध आमेटा	53
• तीन कविताएं	डॉ. रीभा तिवारी	54
• दो कविताएं	डॉ. केशव कुमार शर्मा	56
• पाँच कविताएं	विमला महरिया 'मौज'	58
• पाँच कविताएं	कृष्ण कुमार यादव	61
• दो कविताएं	डॉ. प्रकाश चन्द्र गुप्ता	63
• छः कविताएं	डॉ. एस. के. लोहानी 'खालिस'	64

कहानी

• कम्मों	सुलोचना शर्मा 'लोचन'	66
• कोई योजना नियति की	पूनम पाण्डे	69
• रेगिस्तानी नदी	भरत चन्द्र शर्मा	72
• नया साल मुबारक	माधव नागदा	85
• बड़ी माँ	सिराज फारूक़ी पनवेल	88
• बूढ़े लोग	अखिलेश निगम 'अखिल'	94

डॉ. प्रमोद कोवप्रत

राष्ट्रीय-सामाजिक भावैक्य : केरलीय संतों एवं सुधारकों की भूमिका

अनेक भाषाओं में लिखने के बावजूद भारतीय साहित्य की अंतर्धारा एक है। इसके कई कारण हैं। भाषा सिर्फ दीवार है। जब भाषा की दीवार ढह जाती है तब भारतीयों की भावनाएँ एकत्व में विलीन हो जाती हैं। हम विविधता में एकता की संस्कृति को लेकर चलते हैं। एक ही विरासत, परंपरा, इतिहास, मिथक,पुराण, दर्शन आदि को लेकर हम चलते हैं। हमारी जातीय अस्मिता एवं स्वत्व बोध एक है। भारत के भाषा साहित्य ने यह प्रमाणित किया है कि समग्र रूप से हमारी भावात्मकता एक ही धारा के रूप में सतत् प्रवाहमान है। आदिकालीन-भक्तिकालीन साहित्य से लेकर समकालीन बहुआयामी विमर्शों में भी यही एकरूपता एवं भावैक्य हम पा सकते हैं। इसलिए भारतीय साहित्य की अलग-अलग धाराओं, आन्दोलनों एवं प्रवृत्तियों में भावात्मक एकता को ढूँढना सार्थक ही नहीं, प्रासंगिक प्रयास है, जो समय की माँग है, जबकि देशविरोधी ताकतें या तमस की शक्तियाँ देश को छिन्न-भिन्न करने के विफल् प्रयास में तुले हुए अहोरात्र कार्यरत रहते आ रहे हैं।

भारतीय संतों की परंपरा यहाँ मुख्य विषय है। उन्होंने देश एवं समाज को आगे बढ़ने में तथा एक सूत्र में बाँधने में क्या प्रयास किया है? हिन्दी में संत परंपरा भक्ति साहित्य की ज्ञानश्रयी शाखा में आती है। जब हम दक्षिण के प्रसंग में देखेंगे तो भी कन्नड, तमिल आदि भाषाओं में संत परंपरा साहित्य में सशक्त रूप से पा सकते हैं। जबकि मलयालम साहित्य में एक परंपरा या आन्दोलन के रूप में या साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में संत परंपरा नहीं मिलती है।

मलयालम साहित्य में भक्ति संबंधी रचनाएँ 12वीं शती में पायी जाती है, मगर एक आन्दोलन के रूप में सत्रहवीं शती में भक्ति संबंधी कृतियाँ रची गयीं। राम भक्ति को लेकर कण्णश रामायण और तुंचत्रु रामनुजन एषुंत्रच्चन की अध्यात्म रामायण, काफी चर्चित कृतियाँ हैं। फिर कृष्ण भक्ति के प्रसंग में मेल्पत्रूर नारायण भट्टनिरिपाड और चेरूशेरी की चर्चा प्रमुख रूप से आती है। पूंतानम् नंबूदिरि जैसे भक्त कवि ने एक और गुरूवायूरप्पन की महिता भी गायी गई तो दूसरी ओर 'ज्ञानप्पाना' जैसी कृति द्वारा ज्ञानात्मक विचारों को बढ़ावा दिया।

जब हम केरल के प्रसंग में प्रस्तुत विषय की चर्चा करेंगे तो पहले पहल यहाँ की सामाजिक पृष्ठभूमि पर नजर डालना होगा। फिर सामाजिक सुधार एवं राष्ट्रीय तथा आध्यात्मिक चिंतन को लेकर चलने वाले दो प्रकार के महानुभावों पर चर्चा जरूरी है। इसमें एक समाज कार्यकर्ता एवं सुधारक है तो दूसरा संत, अवधूत या वेदांती है।

उन्नीसवीं शती के केरलीय सामाजिक संरचना समता एवं स्वतंत्रता पर आधारित नहीं थी। जातिवाद एवं सामंतवाद जोरों पर थे। उच्च कुल में पैदा होने वाले लोगों को विशेष अधिकार प्राप्त थे। नंबूदिरि जाति के लोग इसमें सबसे आगे थे। क्षत्रिय एवं नायरों की भी स्थिति बेहतर थी। जमीन्दार भी उच्च वर्ग के लोग थे। वे माप्पिला, ईषवा तथा अन्य तथाकथित दलित जातियों एवं निम्नजातियों के लोगों का दमन करते रहे। इन जमीन्दारों को अंग्रेजों का पूरा समर्थन मिलता था। ऐसे में जाति की दृष्टि से हर मामले में गरीबों तथा दलितों का शोषण चलता रहा। कृषि से जुड़े रहने वाले निम्नवर्ग के लोग हमेशा जमीन्दारी उत्पीड़न के शिकार बनते रहे। उनके वर्चस्व में साधारण लोग पिसते ही नहीं, अधिकाधिक गुलाम होते रहे।

कृषि के अतिरिक्त अन्य कई बातों में भी पिछड़ी जातियों के प्रति भेदभाव चलता रहा। कई प्रकार के सामाजिक अनाचारों के वे शिकार रहे। मंदिर में प्रवेश निषेध, विद्यालयों में प्रवेश निषेध,सरकारी सेवा से वंचित, छुआछूत का उत्पीड़न

R.N.I.-CHHHIN/2010/36256
वर्ष 8, अंक 27-28, जनवरी - जून 2017
I.S.S.N.-2320-3455

राष्ट्रसेतु
RASHTRASETU

Peer Reviewed / Refereed
Research Journal in Hindi

भारतीय साहित्य एवं भाषा समन्वय की
पुरस्कृत और पंजीकृत शोध पत्रिका

अनुक्रम

■ लोक परंपरा :

छत्तीसगढ़ी लोकपरंपरा में लोकविज्ञान / डॉ. विनय कुमार पाठक 1-3

■ साहित्य / शोध :

■ सुमित्रानंदन पंत की काव्य-यात्रा : बदलते आयाम / डॉ. प्रमोद कोवप्रत 4-6

■ प्रेमचन्दऔर फकीर मोहन सेनापति के उपन्यासों
का शिल्पविधान / उमाकान्त गिरि 7-8

■ अशोक वाजपेयी का जीवन और साहित्य : एक
विश्लेषणात्मक अध्ययन / डॉ. सुमित कुमार 9-11

■ हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति का स्वरूप / प्रा. डॉ. कल्पना के बुद्धदेव 12-13

■ दलित कहानियों में चित्रित नारी शिक्षा / बिनी एम. 14-15

■ पुरातत्व / शोध :

अमेरिका में 13 वीं राशि की खोज : छ.ग. 16-18
में ताला की कालपुरुष प्रतिमा से पुष्टि / डॉ. हेमु यदु

■ संस्मरण :

स्व. डॉ. एन. सुन्दरम जी ... बीते 19
अविस्मरणीय ... एम. श्रीनिवासन

■ पुस्तक सम...

दावानल / समीक्षक - डॉ. उषा श्रीवास्तव 20-21

■ साहित्य समाचार : 22

शोधपत्र प्रकाशन हेतु संपर्क कीजिये

प्रिय शोधार्थियों राष्ट्रसेतु भारतीय-साहित्य एवं भाषा समन्वय की एक मात्र विश्वविद्यालयीन शोधपत्रिका है । यह बहुभाषी और समस्त शैक्षिक विषयक भी है । ISSN द्वारा रजिस्टर्ड इस त्रैमासिक पत्रिका में अपने शोधपत्र/शोध आलेख प्रकाशित करवाकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) की योजनाओं एवं सेवा नियमों का लाभ आसानी से प्राप्त कर सकते हैं ।

- संपादक

सुमित्रानंदन पंत की काव्य यात्रा : बदलते आयाम

■ डॉ. प्रमोद कोवप्रत

छायावाद के चार स्तंभों में कविवर सुमित्रानंदन पंत का विशिष्ट स्थान है । युगीन परिवेश को पूर्ण रुप से आत्मसात करने का प्रयास उन्होंने किया । उपनिवेशवादी एवं साम्राज्यवादी युग की समस्त यातनाओं को समझकर सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पुनर्जागरण में पंत ने अपना योग दिया है । श्री रामकृष्ण परमहंस , स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी, महर्षि अरविन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, मार्क्स आदि मनीषियों के दृष्टिकोण एवं विचारों से सुमित्रानंदन पंत काफी प्रभावित रहे । अंग्रेजी कवियों से भी वे प्रभावित थे ।

पंत का जन्म प्राकृतिक रमणीयता से अनुग्रहीत स्थान अलमोडा में हुआ था । प्रकृति की गोद में पलने के कारण कवि में सुकुमारता, कोमलता एवं नवीन सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ । प्रकृति के निरीक्षण से ही पंत को काव्य-रचना की प्रेरणा मिलीथी। हिमालयके अंचलके प्राकृतिक विस्मय ने पंत को लिखने के लिए पेरित किया ।

हिन्दी साहित्य के लिए सुमित्रानंदन पंत का योगदान महत्वपूर्ण है । सन् -1922 में प्रकाशित **उच्छवास** उनका प्रथम काव्य संकलन है । फिर लगभग पचपन-साठ साल तक वे निरंतर लिखते रहें । पल्लव, वीणा, ग्रंथि, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूली, युगांतर, लोकायतन, कला और बूढा चाँद, सात्मकाम आदि महत्वपूर्ण एवं चर्चित रचनाएँ हैं । चिंदबरा नामक काव्य संकलन में युगवाणी से '**वीणी**' तक की चुनी हुई कविताएँ संकलित हैं, जिसे ज्ञान पीठ पुरस्कार (1968) से सम्मानित किया गया । **साठ वर्ष एक रेखांकन** उनकी आत्मकथा है ।

वैयाक्तिकता, स्वानुभूति, कल्पना एवं प्रकृति प्रेम पंत की प्रारंभिक कविताओं की गणनीय विशेषताएँ हैं । आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने बताया है कि ''कल्पना की इस ओलिम्पिक' प्रतियोगिता में पंतजी ने अपने लिए प्रेम और सौदर्य के 'हीट्स' चुन लिए हैं और श्रृंगार वर्णन का उनका रस विशेष चमत्कारपूर्ण हुआ है ।''(1)

विरह पीडा का विलाप सबसे अधिक उनके प्रणय संबंधी काव्य 'ग्रंथि'में मिलता है । प्रणय भंग की मार्मिक पंक्तियाँ यहाँ मिलती हैं।

''हाय मेरे सामने ही प्रणय का
ग्रंथि -बंधन हो गया, वह नव कमल
मधुप सा मेरा हृदय लेकर, किसी
अन्य मानस का विभूषण हो गया''(2)

दूसरी ओर जन्म से ही माँ के वियोग एवं उनके प्यार से वंचित कवि केलिए प्रकृति की गोद ही माँ रही । अर्थात् प्रकृति उनके लिए जीवन का सबकुछ रही है । इसलिए प्रकृति की छाया को छोडने की बात वे सोच नहीं पाते हैं। ''मोह'' की पांक्तियाँ मिसाल के रुप में पढ़ सकते हैं -

'' छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले ! तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ
लोचन (3)

वास्तव में पंत के कई काव्य-संग्रह प्रकृति के एलबम ही हैं । आलंबन, उद्दीपन, मानवीकरण, अलंकार, रहस्यानुभूति, वातावरण सृष्टि, उपदेशान्यकता आदि बहुआयामी रुपों में कवि पंत ने प्रकृति का प्रयोग कया है । गुंजन में जैसे पंक्तियाँ हैं अत्यंत आकर्षक हैं । जैसे -

''हंसमुख प्रसून सिखलाते
पल भर है, जो हंस पाओ
अपने उर की सौरभ से
जग का आंगन भर जाओ (4)

वास्तव में गणपति चन्द्रगुप्त का कथन यहाँ अत्यंत सार्थक लगता है । उनका कहना है -'' विश्व के न जाने कितने कवियों ने प्रकृति का चित्रण अपने काव्य में किया है, किंतु प्रकृति के प्रति जैसा गहरा अनुराग इस महाकवि में परिलक्षित हुआ है, वैसा हमें किसी अन्य में दृष्टिगोचर नहीं होता ।(5)

छायावादी कवि जड़ में भी चेतन का आभास पाते हैं । समस्त ब्रह्मांड में वे अनंत एवं अज्ञात परम शक्ति का एहसास करते हैं । प्रकृति के कण-कण में एक विशेष विस्मय, कुतूहलता एवं चेतना को महसूस करना इसी का परिचायक है । पंत की 'मौन निमंत्रण' प्रथम रश्मि जैसी कविताएँ उदाहरण हैं । **'प्रथम रश्मि'** में कवि पंत बडे सबेरे उठनेवाले पति से जिज्ञासा प्रकट करते हुए पूछते हैं -

''प्रथम रश्मि का आना रंगिणि । तूने

ISSN 2348-7763

दस्तावेज़

अक्तूबर-दिसम्बर, 2018 अंक 161

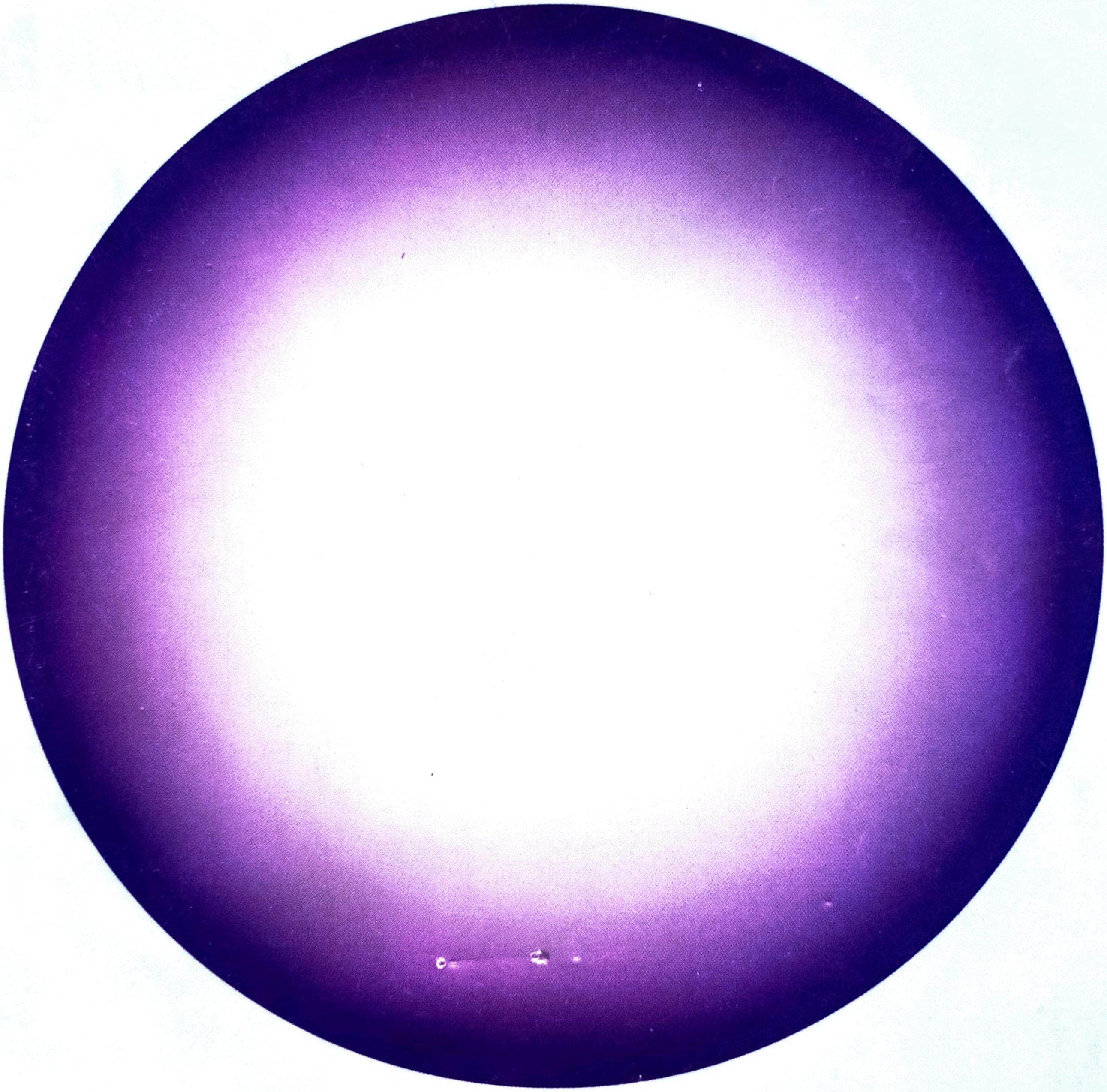

संपादक : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

जंगल नज़दीक आ रहा है (ए. अरविंदाक्षन)

प्रमोद कोवप्रत

समकालीन कविता एवं आलोचना के क्षेत्र में डॉ. ए. अरविंदाक्षन का नाम विशेष उल्लेखनीय है। कविता, आलोचना, यात्रा, वृत्तांत, अनुवाद आदि विधाओं में उनका स्मरणीय योगदान है। बाँस का टुकड़ा और राम की यात्रा उनके खंडकाव्य हैं। घोड़ा, आसपास, राग लीलावती, सपने सच होते हैं, असंख्य ध्वनियों के बीच, भरा-पूरा घर, पतझड़ का इतिहास, जंगल नज़दीक आ रहा है आदि उनके काव्य-संग्रह हैं। समकालीन भावबोध को पूर्णरूप से वहन करती हैं अरविंदाक्षन की कविताएँ। वर्तमान जीवन की विडंबनाएँ, विसंगतियाँ, त्रासदियाँ उसमें उभरकर आती हैं।

उनका अद्यतन काव्य-संग्रह है 'जंगल नज़दीक आ रहा है' (2017)। इसमें 63 छोटी-छोटी कविताएँ हैं। कवि के शब्दों में, "कविता वर्तमान के साथ की एक समांतर यात्रा है। इस यात्रा के दौरान वह बहुत कुछ देखती है, अनुभव करती है।" कवि वर्तमान को महावर्तमान काल के रूप में देखते हैं। वर्तमान की भयावहता से वे आशंकित हैं, बेचैन भी। वे बताते हैं, "मेरी ये कविताएँ हमारे महावर्तमानकाल के विरुद्ध शब्दबद्ध प्रतिक्रियाएँ हैं। एक सामान्य नागरिक की हैसियत से, एक सामान्य शब्दकार की हैसियत से प्रकरित मेरी प्रतिक्रियाएँ हैं। इन प्रतिक्रियाओं में प्रतिरोध के स्वर भी दर्ज़ हैं तथा दुःख और अवसाद के स्वर भी। यह मेरा दुःख नहीं, मेरे पड़ोस का दुःख है।"

समय की चिंता को व्यक्त करने वाली कविता है—'जंगल नज़दीक आ रहा है'। जिस तरह अदृश्य ताकतें हमारे जीवन एवं स्वत्व पर अपना पंजा कसकर खड़ी हैं, उसी प्रकार उसे पहचानना भी ज़रूरी है। वैश्वीकरण में नई गुलामी की प्रथा चल रही है। यह नवउपनिवेशी बौद्धिक शोषण है, जो पूँजी या बहुराष्ट्रीय कंपनियों के माध्यम से हमारा सर्वनाथ कर रहे हैं। एक ओर हम वन विनाश की चर्चा करते हैं पर जंगल का मनुष्य की ओर बढ़ना आशंका का विषय है। जंगल यहाँ वहशीपन का प्रतीक है। जंगली जानवर तमाम शोषण एवं खूँखार करतूतों के लिए आ रहे हैं। लेकिन सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि लोग दिन में सो रहे हैं। समाज में पूँजी एवं अमानवीय शक्तियाँ जंगली जानवर की तरह मनुष्य के ऊपर लपकने को तुले बैठे हैं। ख़ून और माँस ही उसका लक्ष्य। कवि के शब्दों में—

"जंगल का/आवासीय व्यवस्था की तरफ़ बढ़ना
रोकना अनिवार्य है/जंगली जानवरों को/रोकना अनिवार्य है
अब यह तय करने का वक़्त आ गया है
जंगली जानवर मुख्य हैं
या
इनसान को बचाने का काम?"

'चित्र' शीर्षक कविता मनुष्य की हैवानियत की बात बताती है। इसमें दर्द है, वर्तमान का हाहाकार है, हत्याओं का इतिहास छिपा हुआ है। 'लड़की की कहानी' में स्त्री स्वत्व-बोध का सवाल उठाया गया है। साथ ही जिस प्रकार औरत का वस्तुकरण किया जाता है, यौन-शोषण किया जाता है, इसके प्रति आशंका है। उस लड़की के सतरंगी पंखों को स्वयं पिता ने काटा और उसकी समस्त आज़ादी रुद्ध कर दी गई। माँ ने ही उसके पैरों पर बेड़ियाँ बाँध दीं और उस पर अनुशासन का वजन रखा गया। भाइयों ने उसकी आँखों पर पट्टी बाँधी और उस विस्मयकारी दुनिया के आनंद से उसे वंचित रखा। कवि के शब्दों में—

ए. अरविंदाक्षन-जंगल-नज़दीक आ रहा है, साहित्य भंडार इलाहाबाद, प्र.सं. 2017, पृ. 9

ISSN 2231-6191

जन विकल्प

10-11

स्त्री कविता
खिड़की से झांकती नहीं, बाज़ार से

विकल्प, तृशूर

अनुक्रम

संपादकीय

1.	सुभद्राकुमारी चौहान : एक अनूठा व्यक्तित्व	डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल	09
2.	सुभद्राकुमारी चौहान की काव्य साधना	डॉ. गीता कुञ्ञम्मा. सी	14
3.	भारतीय चिंतन और महादेवी का काव्य	डॉ. प्रमोद कोवप्रत	24
4.	नई कविता और शकुन्त माथुर की कविताएँ	विशाल पांडेय	28
5.	कीर्ति चौधरी की कविता में सृजनात्मक दायित्व की संचेतना	डॉ. मूसा. एम	34
6.	मुक्ति-कामना की लेखिका : प्रभा खेतान	डॉ. के. श्रीलता	44
7.	लाइलाज कहे जाने वाले इलाकों की निशानदेही करती कविताएँ	बलवन्त कौर	50
8.	सविता सिंह : स्वप्न और यथार्थ की कविता	डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	55
9.	स्त्री, परिवार, प्रेम : सुनीता जैन का काव्य-संसार	डॉ. सिन्धु ए.	62
10.	हेक और हूक की कविता	डॉ. के.जी. प्रभाकरन	70
11.	दुर्ग द्वारों के खिलाफ	डॉ. राजेश्वरी के.	77
12.	त्वचा का त्यागपत्र नहीं बेलपत्र हैं कविताएँ	अरुण शीतांश	88
13.	उलटी पड़ी चीज़ों को उलट देने का काम	अच्युतानंद मिश्र	112
14.	अनामिका की कविता में स्त्री संवेदना	डॉ. प्रतिभा मुदलियार	120
15.	दुःसमय में हरियाली का सपना बुनते लफ़्ज़	हर्षा सत्यन	126
16.	धूप पीने का व्याकरण	रश्मि रावत	130
17.	लड़कियों के अपने देश की कथा सुनी है?	सुजाता	139
18.	अनीता वर्मा की कविता : आत्मराग के विस्तार की कविता	डॉ. के.के. वेलायुधन	148
19.	सुशीला टाकभौरे की कविताओं में इतिहासबोध की झलकियाँ	कण्णन के.यू.	155
20.	आदिवासी, स्त्री अस्मिता की तलाश की कविता	वी.जी. गोपालकृष्णन	161
21.	नीलेश की कविताओं की बहुस्वरता	डॉ. रम्या पी.आर.	171
22.	स्त्री जीवन की अनकही कहानियों से गुज़रती...	डॉ. राधामणि सी.	176
23.	ज्योति चावला की कविताई	डॉ. के. अजिता	182
24.	तितलियों की तिलाँजली : अति-स्त्री होने के...	डॉ. के.एम. जयकृष्णन	202
25.	जसिन्ता केरकेट्टा की कविता	पी. रवि	208
26.	नारीवादी वर्ग-संघर्ष : बेल हुक्स (अनुवाद : प्रोमिला)		223

भारतीय चिंतन और महादेवी का काव्य

डॉ. प्रमोद कोवप्रत

भारतीय चिंतन धारा सनातन है। उसमें मानव कल्याण निहित है। धर्म का महत्व, आचरण की श्र
की स्वीकृति, श्रद्धा-भाव, सांस्कृतिक गरिमा को अक्षुण्ण रखना, तंग विचारों एवं मानसिकता से दूर र
का रास्ता अपनाना आदि अनेक मुद्दे हो सकते हैं इसके। सकारात्मक दृष्टि कैसे जीवन के प्रति बर
यह महत्वपूर्ण है। महादेवी ने अपने संपूर्ण साहित्य में भारतीयता के प्रवाह को सूखने नहीं दिया। चा
संस्मरण हो, रेखाचित्र हो या काव्य। क्योंकि कवि की दृष्टि में मनुष्य या ब्रह्माण्ड के प्राणी या प्रकृ
कविता है और सभी का एक ही मूल्य है। महादेवी के शब्दों में, "मेरे लिए तो मनुष्य एक सजीव
कवि की कृति तो उस सजीव कविता का शब्द चित्र मात्र है जिससे उसका व्यक्तित्व और संसार के
एकता जानी जाती है। वह एक संसार में रहता है और उसने अपने भीतर एक और इस संसार से अ
अधिक सुकुमार संसार बसा रखा है। मनुष्य में जड़ और चेतन दोनों एक प्रगाढ़ आलिंगन में आब
उसका बाह्याकार पार्थिव और सीमित संसार का भाग है और अंतस्थल अपार्थिव असीम का - एक
से बाँध रखता है तो दूसरा उसे कल्पना द्वारा उडाता ही रहना चाहता है।"[1]

महादेवी की *श्रृंखला की कड़ियाँ* नामक कृति भारतीय नारी के चिन्तन का गद्य-काव्य है। स
इतिहास को वे मुक्ति से जोड़ती हैं। दुःख तो महादेवी के काव्य का ही स्थायी भाव है। बुद्ध के दुखवाद

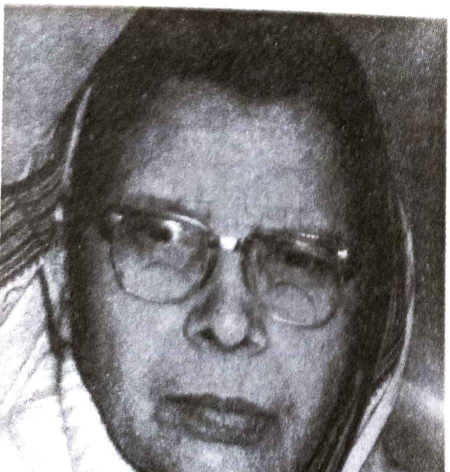

26.3.1907 - 11.9.1987

का खूब प्रभाव उन पर पड़ा है। संसार की दुखमयता को प्रथ
के रूप में बौद्धों ने स्वीकारा है। दुःख, करुणा और आँसू
महादेवी की पंक्तियाँ। *यामा* की भूमिका में उन्होंने बौद्ध
आस्था को रेखांकित भी किया है। उनके शब्दों में, "दुःख
जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँ
क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की
तक भी न पहुँचा सकें, किंतु हमारा एक बूँद आँसू भी
अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाये बिना नहीं गिर सकता।
को अकेला भोगना चाहता है, परंतु दुःख सबको बांटकर - वि
में अपने जीवन को, विश्व-वेदना में अपनी वेदना को, इस प्र

अनुवाद
Anuvaad

अप्रैल-जून 2021

अंक : 187

भारतीय अनुवाद परिषद

Translators' Association of India

अनुक्रम

मीडिया में अनुवाद-रोजगार के अवसर / **(संपादकीय)** -- 5

अनुवाद के प्रति सकारात्मक मानसिकता (अनुवाद संबंधी विचार) / **चित्रा मुद्गल** -- 11

सूचना प्रौद्योगिकी, संचार-क्रांति और अनुवाद / **प्रो. पूरनचंद टंडन** -- 13

अनुवाद : कुछ विचार / **डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत** -- 18

अनुवाद और उसकी विश्वव्यापी उपादेयता / **डॉ. गरिमा जैन** -- 23

भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन एवं अनुवाद / **डॉ. बाबू के. विश्वनाथन** -- 29

अनुवाद अध्ययन : एक ज्ञानानुशासन / **डॉ. ज्योति चावला** -- 33

अनुवाद में 'घरेलूकरण' : अवधारणा और आयाम / **डॉ. हरीश कुमार सेठी** -- 40

अनुवाद और सत्ता : साहचर्य एवं विरोध / **शिखा पांडेय** -- 50

वैज्ञानिक-तकनीकी साहित्य का अनुवाद / **डॉ. शैलजा** -- 55

Poetry Translation : Theory and Practice / **Pushpa R. Menon** -- 59

कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुंतलम' के अनुवादक राजा लक्ष्मण सिंह / **प्रो. विनीता कुमारी** -- 65

रूसी कथाकार मिख़अईल ज़ोषिनका की कहानियों का हिंदी अनुवाद : कुछ अनुभव (अनुवादक के अनुभव) / **डॉ. सोनू सैनी एवं प्रो. रंजना सक्सेना** -- 71

हरिवंशराय बच्चन की अनुवाद दृष्टि / **डॉ. राज शेखर** -- 78

Problem Child / **Malti Joshi (Trans. Bharati P.)** -- 83

धुलाई (मराठी कहानी) / **रा. रं. बोराडे (अनु. डॉ. सचिन गपाट)** -- 93

पुरस्कार (बांग्ला कहानी) / **सत्यजीत राय (अनु. सुचिस्मिता दास)** -- 97

पुनरुत्थान (मलयालम कविता) / **एल. तोमस कुट्टी (अनु. प्रो. प्रमोद कोवप्रत)** -- 102

Thousand Times I Rush to You / हर बार आया हूँ (अंग्रेजी कविता) / **अबु सिद्दीक (अनु. बी.एस. त्यागी)** -- 104

यह प्रकृति का प्रहार है (हंगेरियन कविता) / **शाँदोर पैतोफि (अनु. डॉ. स्नेह गुप्ता)** -- 105

अनुवाद की गंध से दूर एक मौलिक कृति (पुस्तक समीक्षा) / **डॉ. अनिल कुमार द्विवेदी** -- 108